

# 古汉语基础读本

王铁民

黑龙江教育出版社

# 古汉语基础读本

王铁民

黑龙江教育出版社

1987年·哈尔滨

责任编辑：华 盛  
封面设计：贺新路

## 古汉语基础读本

Guahanyu Jichu Duben

王铁民

---

黑 龙 江 教 育 出 版 社 出 版  
(哈尔滨市道里森林街42号)

黑 龙 江 新 华 印 刷 厂 印 刷  
黑 龙 江 省 新 华 书 店 发 行

---

开本 787×1092 毫米 1/32 · 印张 12.75

字数 252,000

1987年7月第1版 1987年7月第1次印刷  
印数 1—6,500

---

统一书号：7357·176 定价：2.55元

## 序

“不愤不启，不悱不发”，这是孔夫子关于教学方法的至理名言。遗憾的是我们教育工作者在涉及这个问题的时候，大多只强调“启”和“发”，而忽视跟它同样重要的“愤”和“悱”。教和学是构成教育的两个方面。愤悱是学者的主观要求，启发是教者的客观指导。只有当学者在思考、钻研一个问题“心求通而未得”（即“愤”）、“口欲言而未能”（即“悱”）的时候，教者从旁加以指点和引导，才会收到使学者豁然开朗的效果。倘若学者在听讲时“一心以为有鸿鹄将至”，那末多好的启发式教学也难以达到预期的目的。我们甚至可以说，愤悱是启发的前提，应该把促成学者的愤悱状态列为教者在教学过程中一项不可忽视的内容。

能够从师而学，当然是一种幸福，因为有人引路，有人指点，省时省力，事半功倍。但是如果全由教者包下来，灌下去，那必然会阻碍学者的积极思维。在这方面，自学成材的人却从自己的加倍劳动中获得了益处，因为没有人包，没有人灌；更没有人喂。他全靠自己，自己动脑想，自己动手查，他在读书的时候决不会“一心以为有鸿鹄将至”，经常来使他苦恼的就是那个“愤悱”。不过，愤悱之后一旦受到启发，他学得的知识就会更扎实，更彻底。假如自学成材之后

来写书，那至少在教学方法这点上会更实际，更具启发性；因为他在自学过程中深知其中甘苦，懂得什么地方最使人愤悱，什么地方最应该启发。

王铁民同志是通过自学取得成就的语文工作者。他的毅力、恒心、刻苦、勤奋，前些年已载诸报刊，这里毋庸我们饶舌。辛劳的耕耘必定会带来收获，铁民同志不仅在教学上取得了很好的效果，而且在科研上也取得了不小的成绩。已经出版的《古代寓言选读》就说明了这一点，那是一本有特色的文言读物。现在，他又进一步扩大了范围，加深了内容，写成这本《古汉语基础读本》。正由于他经历过自学的艰难甚至痛苦的思考与求索，经历过一个又一个愤悱的过程，所以他知道阅读古书什么地方最难，什么地方最易；哪些问题经常造成阻塞，必须加以疏通；哪些问题无关文言大体，可以一带而过。例如，我们都知道，学习文言文——其实白话文也一样，最要紧的是准确无误地理解词义，本书在第一单元首先讲这个问题。在“确切掌握词义”这一节里，用了六千多字的篇幅，从六个方面详细地阐述了掌握词义的方法；而对于有些书里面津津乐道的“读破”之类，却只在有关的地方略作说明，一带而过。还有，每个单元之后所安排的丰富多样的“基础训练”，也都能显示出作者匠心独具的地方，对读者在理论和实践方面都会提供许多帮助。当然，本书也并非完美无缺，在一些小的地方（比如个别词句的释义）也有未能尽如人意之处。智者千虑，必有一失，这是很难避免的。总之，我觉得这是一本倾注了作者心血的有实用价值的好书。

铁民同志要我为他的书写几句话，不揣谫陋，谨述鄙见  
如上。

吕冀平

一九八五年十二月

# 目 录

|                       |        |
|-----------------------|--------|
| <b>第一单元 词 义</b> ..... | ( 1 )  |
| 第一节 词的本义和引申义.....     | ( 1 )  |
| 第二节 古今词义的变化.....      | ( 9 )  |
| 第三节 音节和词义.....        | ( 18 ) |
| 第四节 读音和词义.....        | ( 25 ) |
| 第五节 确切掌握词义.....       | ( 36 ) |
| 第六节 常用工具书及其使用.....    | ( 46 ) |
| <b>课 文</b> .....      | ( 60 ) |
| 率由旧章 .....            | ( 60 ) |
| 谢公围棋 .....            | ( 61 ) |
| 揠苗助长 .....            | ( 61 ) |
| 缪牵于事 .....            | ( 62 ) |
| 太宗纳谏 .....            | ( 62 ) |
| 宣王好射 .....            | ( 63 ) |
| 用人如器 .....            | ( 63 ) |
| 民为国本 .....            | ( 64 ) |
| 浑沌之死 .....            | ( 66 ) |
| 陈平用计 .....            | ( 66 ) |
| 三人成虎 .....            | ( 67 ) |

|        |      |
|--------|------|
| 具区白雁   | (67) |
| 运斤成风   | (68) |
| 曲突徙薪   | (69) |
| 古之豪杰   | (69) |
| 墨说     | (70) |
| 盗亦有道   | (70) |
| 相依为命   | (71) |
| 吕梁丈夫   | (72) |
| 灵丘丈人   | (73) |
| 千钧一笠   | (75) |
| 荆人袭宋   | (76) |
| 赵武灵王胡服 | (78) |
| 基础训练   | (80) |

|                      |       |
|----------------------|-------|
| <b>第二单元 词法（上） 实词</b> | (87)  |
| 第一节 实词的类别和用法         | (87)  |
| 第二节 词类活用             | (90)  |
| 第三节 词类活用             | (94)  |
| 第四节 词类活用             | (99)  |
| <b>课 文</b>           | (103) |
| 能起死人                 | (103) |
| 猱取虎脑                 | (104) |
| 仕数不遇                 | (104) |
| 塞翁失马                 | (105) |
| 鲁侯养鸟                 | (105) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 桓公衣紫      | (106) |
| 颜回索米      | (107) |
| 善善恶恶而亡    | (108) |
| 梁君出猎      | (108) |
| 古琴价高      | (109) |
| 读孟尝君传     | (110) |
| 天将降大任于是人  | (111) |
| 鲍叔荐管仲     | (113) |
| 水则载舟      | (114) |
| 王者何贵      | (115) |
| 功皆未至      | (115) |
| 鲍叔善知人     | (116) |
| 管子并三行之过   | (117) |
| 桓公五见小臣稷   | (118) |
| 千里马遇伯乐    | (119) |
| 良马致远      | (119) |
| 张良拾履      | (120) |
| 前事不远，吾属之师 | (122) |
| 若石之死      | (122) |
| 子产不毁乡校    | (123) |
| 位高意下      | (124) |
| 苟变为吏      | (125) |
| 为国之道      | (126) |
| 更法        | (126) |
| 是谓大同      | (130) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 法之不行，自上犯之 | (132) |
| 持心如水      | (133) |
| 万事不可执一法   | (133) |
| 四面楚歌      | (134) |
| 义 猴       | (135) |
| 得时者昌      | (136) |
| 基础训练      | (137) |

|                      |       |
|----------------------|-------|
| <b>第三单元 词法（下） 虚词</b> | (145) |
| 第一节 代 词              | (145) |
| 第二节 副 词              | (155) |
| 第三节 介词 连词            | (166) |
| 第四节 助 词              | (175) |
| 第五节 兼 词              | (190) |
| 课 文                  | (192) |
| 唐雎谓信陵君               | (192) |
| 申子请罪                 | (192) |
| 大器晚成                 | (193) |
| 人一能之，己百之             | (194) |
| 不能受谏，安能谏人            | (195) |
| 子且鼓肱                 | (195) |
| 虞庆为屋                 | (197) |
| 傅马栈                  | (197) |
| 宁可以马上治之              | (198) |
| 其身正，不令而行             | (199) |

|                      |       |       |
|----------------------|-------|-------|
| 天时不如地利               | ..... | (200) |
| 刘邦求贤诏                | ..... | (201) |
| 奉公如法                 | ..... | (202) |
| 以公共为心                | ..... | (203) |
| 旱斯具舟，热斯具裘            | ..... | (204) |
| 炳烛而学                 | ..... | (204) |
| 饱而知人之饥               | ..... | (205) |
| 寡人之于国                | ..... | (206) |
| 得民心有道                | ..... | (208) |
| 晏子不更宅                | ..... | (209) |
| 许金不酬                 | ..... | (210) |
| 送董邵南序                | ..... | (211) |
| 召公谏弭谤                | ..... | (212) |
| 圃人为圃                 | ..... | (215) |
| 用力与用智                | ..... | (215) |
| 赵人患鼠                 | ..... | (216) |
| 公输刻凤                 | ..... | (217) |
| 材 论                  | ..... | (217) |
| 基础训练                 | ..... | (218) |
| <b>第四单元 句法（上） 单句</b> | ..... | (227) |
| 第一节 句子成分             | ..... | (227) |
| 第二节 固定格式             | ..... | (233) |
| 第三节 常用句式             | ..... | (241) |
| 课 文                  | ..... | (254) |

|               |       |       |
|---------------|-------|-------|
| 集逢鳩           | ..... | (254) |
| 面瞽不善          | ..... | (254) |
| 晏子逐高缭         | ..... | (255) |
| 亚夫治军          | ..... | (255) |
| 不法常可          | ..... | (257) |
| 韩信将兵          | ..... | (259) |
| 以严莅人          | ..... | (259) |
| 得绢之辱          | ..... | (260) |
| 仲尼称水          | ..... | (260) |
| 管仲知人          | ..... | (261) |
| 鶡鶠噪虎          | ..... | (263) |
| 管仲答封人         | ..... | (264) |
| 庄王围宋          | ..... | (264) |
| 有大略者不问其短      | ..... | (266) |
| 高祖论得天下        | ..... | (267) |
| 受人者畏人         | ..... | (268) |
| 不知人之祸         | ..... | (268) |
| 庖丁解牛          | ..... | (269) |
| 九方皋相马         | ..... | (271) |
| 燕昭王求贤         | ..... | (273) |
| 河中石兽          | ..... | (274) |
| 威王召齐两大夫       | ..... | (275) |
| 基础训练          | ..... | (276) |
| 第五单元 句法(下) 复句 | ..... | (284) |

|            |       |
|------------|-------|
| 第一节 联合复句   | (284) |
| 一、并列复句     | (284) |
| 二、连贯复句     | (285) |
| 三、递进复句     | (285) |
| 四、选择复句     | (286) |
| 第二节 偏正复句   | (286) |
| 一、因果复句     | (286) |
| 二、转折复句     | (287) |
| 三、假设复句     | (287) |
| 四、条件复句     | (288) |
| 五、目的复句     | (288) |
| 课 文        | (289) |
| 物各有短长      | (289) |
| 涉深水者观蛟龙    | (289) |
| 管仲破厚葬      | (290) |
| 世有伯乐而后有千里马 | (290) |
| 嗜鱼弗受鱼      | (291) |
| 晏子辞君赐      | (292) |
| 门有噬狗       | (293) |
| 栋梁之利缓      | (294) |
| 鱼我所欲也      | (295) |
| 三不足        | (297) |
| 养人术        | (297) |
| 变则通        | (299) |
| 基础训练       | (300) |

|                       |       |       |
|-----------------------|-------|-------|
| <b>第六单元 古书标点和古文今译</b> | ..... | (306) |
| 第一节 古书的标点             | ..... | (306) |
| 第二节 古文今译              | ..... | (310) |
| 课 文                   | ..... | (317) |
| 务实知变                  | ..... | (317) |
| 君嗜之，臣食之               | ..... | (318) |
| 忠臣事君                  | ..... | (318) |
| 择人而树                  | ..... | (319) |
| 成大功者不小苛               | ..... | (319) |
| 无为亲痛仇快                | ..... | (320) |
| 谏太宗十思疏                | ..... | (320) |
| 基础训练                  | ..... | (321) |

|                  |       |       |
|------------------|-------|-------|
| <b>第七单元 复习要点</b> | ..... | (325) |
| 第一节 词 义          | ..... | (325) |
| 一、双音古今同形词语       | ..... | (325) |
| 二、古今词义有别         | ..... | (327) |
| 三、通假字            | ..... | (329) |
| 第二节 词 法          | ..... | (330) |
| 一、名词动用           | ..... | (330) |
| 二、名词用作状语         | ..... | (331) |
| 三、动、形、名的使动用法     | ..... | (331) |
| 四、形、名的意动用法       | ..... | (332) |
| 五、常用虚词           | ..... | (332) |
| 第三节 句 法          | ..... | (340) |

|               |       |
|---------------|-------|
| 一、判断句         | (340) |
| 二、被动句         | (340) |
| 三、省略句         | (340) |
| 四、宾语前置        | (341) |
| 五、定语后置        | (341) |
| 课 文           | (341) |
| 萧何追韩信         | (341) |
| 书何易于          | (345) |
| 冯谖客孟尝君        | (348) |
| 送薛存义序         | (351) |
| 说 难           | (353) |
| 微 舟           | (358) |
| 答司马谏议书        | (361) |
| 谏逐客书          | (363) |
| 贾谊论           | (367) |
| 基础训练          | (369) |
| 《基础训练》参考答案与提示 | (376) |
| 后 记           | (387) |

# 第一单元 词 义

## 第一节 词的本义和引申义

一词多义是古今汉语共有的语言现象，只是这种现象在古汉语中更为普遍。词的多义性可以增强语言的灵活性和丰富性，但同时也给我们学习古汉语带来困难。

造成一词多义的根本原因是词义引申。词义引申是词义变化的一种方式。引申，就是从一个词的本义申展出另一个或几个与它有关的词义。词的本义是指我国上古时代语言文字材料所能证明的本来的意义（不一定是原始意义）。掌握词的本义，可以了解词义演变的规律，使我们以简驭繁，准确地理解词义，从而提高阅读古文的能力。反之，如果抓不住词的本义，分不清词的本义和引申义，那么，尽管罗列一大堆意义，却仍然不得要领，增加记忆负担。比如一个“间”字，旧版《辞海》列出三个读音（jiān jiàn xiān），二十八个意义，但并没有对它的本义和引申义进行条分缕析的说明。其实这许多意义之间是有联系的，而且其中有一个中心意思，即本义，其它意义则都是由这个中心意思引申来的。

“间”本写作“閒”，是会意字，表示月光从门缝中照进来，因此，“间”的本义是门缝：

晏子为齐相(xìàng)，出，其御(车夫)之妻从门间而窥(偷看)其夫(丈夫)。(《史记·管晏列传》)

由本义门缝分别引申出以下四组意义：

1. 门缝→缝隙→中间→量词

缝隙：彼节者有间。(《庄子·庖丁解牛》)

中间：凡天地之间，有鬼，非人死精神为之也。(《论衡·订鬼》)

量词：方宅十余亩，草屋八九间。(陶渊明《归园田居》)

2. 门缝→缝隙→嫌隙→离间

嫌隙：公患三桓之侈也，欲以诸侯去之；三桓亦患公之妾也，故君臣多间。(《左传·哀公二十七年》)

离间：汉王患之，乃用陈平计，间项王。(《史记·陈平用计》)

3. 门缝→缝隙→介入其间→间隔

介入其间：肉食者谋之，又何间焉？(《左传·曹刿论战》)

间隔：自云先世避秦时乱，率妻子邑人来此绝境，不复出焉，遂与外人间隔。(《桃花源记》)

4. 门缝→缝隙→空闲→安闲

空闲：闲居隘巷，室迩心遐。(左思《魏都赋》)

安闲：吾子取其麋鹿，以安敝邑，若何？(请你们自己去打麋鹿，让我们休息一下，怎么样？)(《左传·殽之战》)

含有第四组意义的“间”后来写作“闲”。

从上面的分析中，我们不难看出，在一个词的多种意义或一组意义有联系的词的多种意义中，总有一个中心的意